[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3590

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगो का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

श्रीमती संध्या देव
सहा0 प्रा0 समाजशास्त्र
शा0 महिला महाविद्यालय नरसिंहपुर

रंग आनंद एवं उत्साह का प्रतीक है। रंगों का मानव मस्तिष्क पर विशेष प्रभाव पड़ता है। रंग किसी भी वस्तु में आकर्षकता एवं वोधगम्यता उत्पन्न करते है। रंग की प्राप्ति का स्त्रोत प्रकाश है। विभिन्न रंगो की पहचान इसीलिए संभव होती है क्योंकि वस्तुएं प्रकाश को परावर्तित यो अभिशोषित करती है। प्रकाश आंखो में प्रवेश करता है। हमारी दृष्टि संवेदना पर क्रिया करता है। इसके कारण प्रकाश की संवेदना उत्पन्न होती है और मस्तिष्क को रंग की अनुभूति होती है।

सामान्यतः वस्तुएं प्रकाश का कुछ भाग परावर्तित एवं कुछ भाग अभिशोषित करती है। उदा0 यदि वस्तुऍं हरे रंग की है। तो वह हरे के अलावा सभी रंगो को अभिशोषित करती हैं। जो वस्तु सफेद दिखाई देती है वह सभी रंगो को परावर्तित करती है। काली वस्तुएं सभी रंगो को अभिशोषित करती है।
रंगों में तीन प्रमुख गुण होते हैं–

1. **ह्यु–**यह रंगो के नाम को दर्शाता है। रंग कई प्रकार के होते है। हरा पीला लाल रंग आदि। इन रंगो का व्यक्ति पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।
2. **वेल्यु–**यह रंगो के हल्केपन या गहरेपन को दर्शाता है। यह वेल्यु सफेद से काले रंग के बीच होती है सफेद रंग की उच्चतम वेल्यु एवं काले रंग की निम्नतम वेल्यु होती है।
3. **तीव्रता या क्रोमा–**यह रंगो के चमकीलेपन या मंदपन को बताने वाला गुण है। खुरदुरी एवं अममान सतह पर रंग की तीव्रता कम दिखायी देती है। जब सतह चिकनी होती है तो रंग की तीव्रता अधिक होती है।

वस्तु एवं विषय में आकर्षकता एवं बोध्गम्यता उत्पन्न करने हेतु रंगों का प्रयोग किया जाता है। रंगो के प्रयोग का शैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक सामाजिक सभी क्षेत्रों में महत्व है। अतः रंगो का सामाजिक परिप्रेक्ष्य भी महत्वपूर्ण है।

सामाजिक जीवन में अलग–अलग रंगो को अलग–अलग स्थितियों का प्रतीक माना जाता है। उदा0 के लिये काला रंग–बुराई का प्रतीक है। काला जादू का प्रयोग किसी व्यक्ति को नुकसान पहुचाने के लिये किया जाता है।

लाल रंग	–	प्रेम एवं स्फुर्ति का प्रतीक है। स्वागत हेतु इसका प्रयोग होता है।
हरा रंग	–	प्रगति एवं उत्साह का प्रतीक है
नीला रंग	–	सुख शांति का प्रतीक है
बैंगनी रंग	–	ऐश्वर्य एवं राजस्व का प्रतीक है।
सफेद रंग	–	शोक पवित्रता एवं शांति का प्रतीक है। दुखः के समय सफेद वस्त्र पहने जाते हैं।

रंगो का संबंध विभिन्न ग्रहों से भी लगाया जाता है इस कारण एक अलग–अलग दिन अलग–अलग रंगों के वस्त्र पहन्ना अच्छा माना जाता है।
जैसेः– सोमवार – सफेदरंग, मंगलार – लाल या नारंगी रंग, बुधवार – हरा रंग, गुरूवार – पीला रंग, शुक्रवार – नीला रंग, शनिवार – काला रंग आदि।

विभिन्न त्यौहार, उत्सक, धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन, सामाजिक जीवन के प्रमुख अंग है। हमारे देश में होली, दीपावली, रक्षाबंधन आदि त्यौहार मनाये जाते है जन्मोत्सव विवाह आदि के अलावा पर विशेष आयोजन किये जाते है। विभिन्न मेले एवं उत्सवों का आयोजन होता है इन सभी अवसरों पर वेशभूषा सजावट, उपहार, पूजा सामग्री भोजन सामग्री में विभिन्न रंगो का आकर्षक संयोजन दिखाई देता है। त्यौहारो एवं उत्सवों में रंग बिरंगे वस्त्र पहने जाते है। जनजातीय एवं ग्रामीण समाज में भी विशेष अवसरों पर गहरे रंग के वस्त्र पहनना अच्छा माना जाता है। वस्त्रों के साथ ही रंग बिरंगे आभूषण जो फूलों मोतियो आदि से बने होते है। धारण किये जाते है।

सजावट हेतु अल्पना, रंगोली झंडे, तोरण, पर्दो आदि का प्रयोग किया जाता है। इनके निर्माण में विभिन्न रंगो का समन्वय दिखाई देता है। घरों में दीवारों पर भी विभिन्न रंगों से पेंट करवाया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

त्यौहारों एवं विशेष अवसरों पर एक दूसरे को उपहार देने का प्रचलन है। उपहारों को रंग बिरंगे कागजों से सजाकर दिया जाता हैं। स्वागत हेतु रंग बिंरगे पुष्प गुच्छ एवं मालाओं का प्रयोग होता है।

हमारे समाज में दैनिक एवं विशेष अवसरों पर धार्मिक आयोजन का महत्व है। पूजन सामग्री में हल्दी, कुंकुम गुलात आदि का प्रयोग होता है। देवताओं को अलग–अलग रंगों के फूल चढ़ाये जाते है। फूलों की मालाएं बनाने में भी रंगो का संयोजन दिखाई देता है।

त्यौहारों एवं विवाह आदि के अवसर पर बनने वाली भोजन सामग्री भी अलग–अलग रंगो की होती है विशेष रूप से मिठाईयॉ कुछ पीले रंग कुछ सफेद रंग की और कुछ मिश्रित रंगो की होती है। पेय पदार्थ भी विभिन्न रंगो के होते है।

अतः स्पष्ट होता है कि सामाजिक जीवन में रंग एंव उनका आकर्षक संयोजन महत्पूर्ण है। इनका प्रयोग जीवन में आनंद एवं उत्साह का प्रतीक है।

संदर्भ सूची –

1 *अग्रवाल जी के, सामाजिक मानवशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा*
2 *आलम काजीगैसः सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन*
3 *पाटर्नामंजु, वर्मासंध्याः संसाधन प्रंबध, शिवा प्रकाशन इंदौर*
4 *सिंह अरूण कुमारः सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन*